INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2024; 6(1): 28-32
Received: 05-11-2023
Accepted: 09-12-2023

डॉ. विनोद यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर–प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, राजकीय महाविद्यालय, मंगरौरा, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. विनोद यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर–प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, राजकीय महाविद्यालय, मंगरौरा, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत का राजनीतिक परिदृश्य

डॉ. विनोद यादव

सारांश
'पूर्व मध्यकाल' शब्द प्राचीन काल तथा मध्यकाल के अंतर्वर्ती काल का सूचक है। भारतीय इतिहास में लगभग 650 ई0 से 1200 ई0 तक के समय को 'पूर्व मध्यकाल' कहा जाता है। पूर्व मध्यकालीन समाज में एक विशेष वर्ग का उदय हुआ, जिसे 'सामन्त' कहा जाता था। यह समाज का सबसे शक्तिशाली वर्ग था। सम्राट हर्ष की मृत्यु के पश्चात उत्तर भारत छोटे–छोटे राज्यों में बँट चुका था। हर्ष के बाद उत्तर भारत में जिन शक्तियों का उदय हुआ, उन्हें राजपूत शासक की संज्ञा प्रदान की जाती है। पूर्व मध्यकाल में उत्तर भारत पर जिन राजपूत राजवंशों ने शासन किया, उनके नाम इस प्रकार हैं–कन्नौज का साम्राज्य, गुर्जर–प्रतिहार वंश, गहड़वाल वंश, पाल एवं सेनवंश, चौहान वंश, चालुक्य या सोलंकी वंश, हिन्दूशाही राज्य, चन्देल वंश, कश्मीर के राजवंश, मालवा का परमार वंश, कलचुरि चेदि वंश, मेवाड़ का राजवंश आदि। भारतीय इतिहास के इसी काल में भारत पर अरबों और तुर्कों का आक्रमण हुआ और अंततः तुर्कों ने विजयश्री को प्राप्त किया। तुर्कों के विजय प्राप्त करने और उनकी सत्ता स्थापित होने के साथ ही पूर्व मध्यकाल की समाप्ति होती है और भारतीय इतिहास में मध्यकाल की शुरुवात मानी जाती है।

कूटशब्द : गौडवहो, राजतरंगिणी, भवभूति, खजुराहो, उद्भाण्डपुर, खलीफा वालिद।

प्रस्तावना
सम्राट हर्ष की मृत्यु के पश्चात उसके साम्राज्य का पतन हो गया और उसका स्थान छोटे–छोटे राज्यों ने ले लिया। हर्ष की मृत्यु के पश्चात् भी कन्नौज का महत्व बना रहा और यशोवर्मा ने कन्नौज का शासन प्राप्त किया। यशोवर्मा के समकालीन कश्मीर के शासक ललितादित्य ने सम्पूर्ण उत्तर भारत को जीतकर उसी आदर्श को स्थापित करने का प्रयास किया। 8वीं शताब्दी के मध्य में पश्चिमी भारत में गुर्जर–प्रतिहार, बंगाल में पाल और दक्षिण में राष्ट्रकूट वंश की शक्ति का उत्थान हुआ तथा इनमें से प्रत्येक ने कन्नौज में अपनी सत्ता स्थापित करने का प्रयास किया। हर्ष की मृत्यु के बाद भी कन्नौज जिसे 'महोदयश्री' के नाम से जाना जाता था, वैभव एवं शक्ति का केन्द्र बिन्दु बना रहा और उत्तर भारत के समस्त शासक उस पर अपना आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास करते रहे। यही कारण है कि अरब लोग सिन्ध और मुल्तान पर अधिकार स्थापित कर लेने के बावजूद भारत के अन्दर प्रवेश करने में सफल नहीं हुए। लगभग 1000 ई0 के बाद भारत अपने आन्तरिक–सामाजिक तनाव, नैतिक और धार्मिक पतन तथा राजनीतिक विकेन्द्रीकरण को रोकने में सफल नहीं हो सका और ऐसे में तुर्कों के आक्रमण हुए तथा यहाँ के शासक उनका मुकाबला नहीं कर सके। फलस्वरूप भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना हो गयी। पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत में शासन करने वाले महत्वपूर्ण राजवंशों का संक्षिप्त विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है–

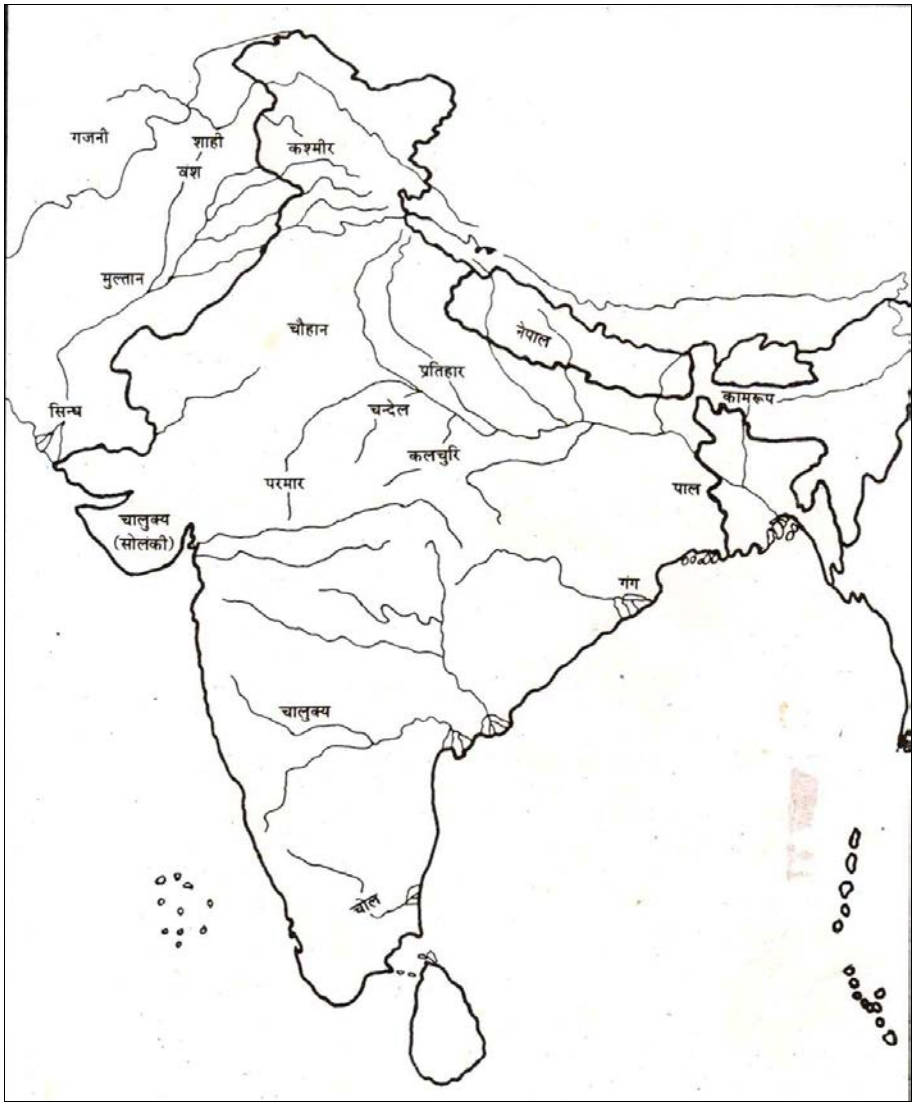

मानचित्र 1: पूर्व मध्य कालीन भारत में शासन करने वाले प्रमुख राजवंश

1. कन्नौज का साम्राज्य

सम्राट हर्ष की मृत्यु के बाद यशोवर्मा (लगभग 690ई0–740ई0) कन्नौज का शासक बना। यशोवर्मा के शासन काल की घटनाओं की जानकारी का प्रमुख स्रोत उसके दरबारी कवि वाक्पति का ग्रंथ 'गौडवहो' है। 'गौडवहो' प्राकृत भाषा का ग्रंथ है, जिसमें यशोवर्मा की विजयों का वर्णन किया गया है। इस ग्रंथ में यशोवर्मा की उपलब्धियों को अतिश्योक्तिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। परन्तु इसके अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि निःसन्देह वह एक शक्तिशाली शासक था। यशोवर्मा ने मगध और बंगाल को जीत लिया। सिन्ध को विजित करने के पश्चात् अरबों ने कन्नौज की ओर एक सेना भेजी, जिसे यशोवर्मा ने पराजित कर दिया। चालुक्य शासक विजयादित्य के अभिलेख से पता चलता है कि यशोवर्मा ने विजयादित्य के पिता विनयादित्य के साथ युद्ध किया था। कल्हण की पुस्तक 'राजतरंगिणी' में यशोवर्मा और ललितादित्य के मध्य हुए लम्बे संघर्ष तथा यशोवर्मा की पराजय का उल्लेख है। इस पराजय के पश्चात् भी यशोवर्मा जीवित रहा, परन्तु उसकी शक्ति क्षीण हो चुकी थी। यशोवर्मा के पश्चात् उसके तीन उत्तराधिकारी शासक हुए, परन्तु उनका शासन अल्प समय तक रहा। कन्नौज के शासक यशोवर्मा का उत्थान जितनी तेजी से हुआ। उसी प्रकार से उसका पतन भी हो गया। उसकी उपलब्धियों को देखने से स्पष्ट पता चलता है कि वह एक महान योद्धा और सम्राट था जिसने एक बड़ा साम्राज्य स्थापित कर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। यशोवर्मा स्वयं विद्वान था और विद्वानों का आश्रयदाता भी था। वाक्पति के अतिरिक्त संस्कृत के महान कवि एवं नाटककार भवभूति भी उसके दरबार में निवास करते थे। भवभूति ने तीन प्रसिद्ध नाटक ग्रंथों मालतीमाधव, उत्तररामचरित् और महावीरचरित् की रचना की थी।

कन्नौज में यशोवर्मा के वंश के पश्चात् आयुध नामधारी शासकों का शासन स्थापित हो गया। इस वंश में कुल तीन शासक हुए–वज्रायुध, इन्द्रायुध और चक्रायुध। इनके समय पश्चिमी भारत में प्रतिहार, पूर्व में पाल और दक्षिण में राष्ट्रकूट वंश शक्तिशाली बन चुका था और इन सभी तीनों ने कन्नौज पर अपना शासन स्थापित करने का प्रयास किया। कन्नौज पर शासन स्थापित करने के लिए पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट शासकों के मध्य जो संघर्ष हुआ, उसे 'त्रिपक्षीय अथवा त्रिकोणात्मक संघर्ष' के रूप में जाना जाता है।

2. गुर्जर–प्रतिहार वंश

गुर्जर–प्रतिहार वंश का संस्थापक नागभट्ट प्रथम था, जिसने 730 ई0 से 756 ई0 तक शासन किया। ग्वालियर अभिलेख के अनुसार नागभट्ट प्रथम अरबों को सिन्ध से आगे बढ़ने से रोकने में सफल रहा। राष्ट्रकूट शासक दंतिदुर्ग के हाथों इसे पराजित होना पड़ा। नागभट्ट के उत्तराधिकारी कक्कुक तथा देवराज के बाद वत्सराज (775–800ई0) एक महत्वाकांक्षी शासक हुआ। वत्सराज ने राजस्थान का मध्य भाग तथा उत्तर भारत का पूर्वी भाग जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। कन्नौज पर अधिकार स्थापित करने के क्रम में वत्सराज ने पाल वंश के शासक

धर्मपाल को पराजित किया। परन्तु राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हुआ। वत्सराज के पुत्र तथा उत्तराधिकारी नागभट्ट द्वितीय (800–833ई0) ने प्रतिहार वंश की शक्ति तथा प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया। इसी वंश के शासक भोज के ग्वालियर लेख से पता चलता है कि नागभट्ट द्वितीय ने आन्ध्र, सिन्ध, विदर्भ तथा कलिंग के शासकों को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार स्थापित करने के लिए चल रहे त्रिपक्षीय संघर्ष में उसने पाल शासक धर्मपाल के साथ युद्ध किया और मुंगेर के समीप हुए एक युद्ध में उसे पराजित किया। संभवतः चक्रायुध तथा धर्मपाल के आमंत्रण पर राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय ने उत्तरी भारत का विजय अभियान शुरू किया और प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय को पराजित किया। राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय के वापस चले जाने के पश्चात् पाल शासक धर्मपाल और देवपाल ने उत्तर भारत में अपनी स्थिति मजबूत कर ली। मालवा और गुजरात के प्रदेश नागभट्ट के अधिकार से निकल गए। नागभट्ट द्वितीय के बाद उसका पुत्र रामभद्र (833–836ई0) शासक हुआ। इसके बाद मिहिर भोज (836–885ई0) प्रतिहार वंश का महत्वपूर्ण शासक हुआ। मिहिरभोज के पश्चात् महेन्द्रपाल प्रथम (885–910ई0) और महीपाल (912–944ई0) शासक हुए। महीपाल के शासन के अंतिम वर्षो में प्रतिहार वंश की शक्ति दुर्बलता की ओर अग्रसर होनी आरम्भ हो गयी और धीरे–धीरे आगामी लगभग 100 वर्षों से कम समय में ही प्रतिहार साम्राज्य का पतन हो गया।

3. गहड़वाल वंश

प्रतिहार वंश के पतन और महमूद गजनवी के आक्रमण के कारण कन्नौज का वैभव नष्ट हो गया था। कन्नौज के वैभव तथा समृद्धि को वापस लाने का श्रेय गहड़वाल वंश के शासकों को दिया जाता है। इस वंश के पहले शासक चन्द्रदेव ने राष्ट्रकूट शासक गोपाल को पराजित कर कन्नौज और उसके आस–पास के क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। चन्द्रदेव ने लगभग 1080–85ई0 से 1100 ई0 तक शासन किया। चन्द्रदेव के पुत्र तथा उत्तराधिकारी मदनचन्द्र अथवा मदनपाल के बारें में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। मदनचन्द्र का पुत्र तथा उत्तराधिकारी गोविन्दचन्द्र (1114–1154ई0) योग्य तथा महत्वाकांक्षी शासक सिद्ध हुआ। गोविन्दचन्द्र ने मगध तथा मालवा क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। इसने कश्मीर के शासक जयसिंह सिद्धराज तथा दक्षिण के चोल शासकों से मित्रतापूर्ण सम्बंध स्थापित किए। गोविन्दचन्द्र के पश्चात् विजयचन्द्र (1154–1170ई0) तथा जयचन्द्र (1170–1194ई0) इस वंश के महत्वपूर्ण शासक हुए। जयचन्द्र इस वंश का अंतिम शासक था, जिसे मु0 गोरी के हाथों 'चन्दावर के युद्ध' में पराजय झेलनी पड़ी और इसके राज्य पर तुर्कों का अधिकार हो गया।

4. पाल एवं सेन वंश

सम्राट हर्ष के समकालीन शासक शशांक के पश्चात् बंगाल में पाल वंश का शासन आरम्भ हुआ। धीरे–धीरे इस वंश की गणना उत्तर भारत के एक प्रमुख और शक्तिशाली राजवंश के रूप में की जाने लगी। पाल वंश की स्थापना बौद्ध धर्म के अनुयायी गोपाल ने 750 ई0 में किया था, जिसने 770ई0 तक शासन किया। गोपाल के बाद उसका पुत्र तथा उत्तराधिकारी धर्मपाल पाल वंश की गद्दी पर आसीन हुआ। धर्मपाल ने 770 ई0 से 810 ई0 तक राज्य किया और कन्नौज पर अधिकार स्थापित करने के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भी भाग लिया तथा आंशिक सफलता भी प्राप्त किया। धर्मपाल के बाद देवपाल (810–850 ई0) पाल वंश का शासक बना। देवपाल एक योग्य एवं महत्वाकांक्षी शासक सिद्ध हुआ। देवपाल के उत्तराधिकारी निर्बल साबित हुए, जिसके कारण उनके समय में पाल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया।

पालवंश के शासकों के पश्चात् बंगाल पर सेन वंश के शासकों का आधिपत्य रहा। इस वंश के शासक कर्नाटक के ब्राह्मण वंश से सम्बन्ध रखते थे, जो बाद में क्षत्रिय बन गए थे। इसी कारण इस वंश के शासक अपने को 'ब्रह्मक्षत्रिय' कहते थे। इस वंश का संस्थापक सामन्तसेन नामक व्यक्ति था। इस वंश का प्रथम और महान शासक विजयसेन (1095–1158ई0) हुआ। यह एक महत्वाकांक्षी और साहसी शासक था, जिसने एक छोटी सी जागीर को बंगाल के बड़े राज्य में परिवर्तित कर दिया। विजयसेन के पश्चात् बल्लालसेन (1158–1178 ई0) और लक्ष्मणसेन (1178–1205 ई0) सेन वंश के महत्वपूर्ण शासक हुए। लक्ष्मणसेन के समय में ही बंगाल पर बख्तियार खिलजी का आक्रमण हुआ और सेन वंश की राजधानी नदिया पर तुर्कों ने अधिकार का लिया। इस प्रकार सेन वंश अपने पतन की ओर अग्रसर हो गया।

5. चौहान या चाह्वान वंश

राजपूत राजवंश के शासकों में चौहान वंश का महत्वपूर्ण स्थान है। चौहान वंश की अनेक शाखाओं में से सातवीं शताब्दी ई0 में स्थापित शाकंभरी का चौहान वंश, जिसका संस्थापक वासुदेव था, विशेष ख्याति अर्जित किया। वासुदेव के बाद सामंत पूर्णतल, जयराज, विग्रहराज प्रथम, चन्द्रराज, गोपेन्द्रराज और दुर्लभराज प्रथम शासक हुए। आठवीं शताब्दी के अंतिम तीन दशकों में दुर्लभराज प्रथम प्रतिहारों का सामंत था। दुर्लभराज के उत्तराधिकारी गोविन्दराज प्रथम ने प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय के दरबार में सम्मान प्राप्त किया। गोविन्दराज के पश्चात् क्रमशः चन्द्रराज द्वितीय, गूवक द्वितीय, चन्दन और वाक्पति राज ने कुछ समय तक शासन किया। दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में वाक्पतिराज प्रथम ने अपने को प्रतिहारों के आधिपत्य से मुक्त कर लिया। इसके पुत्र सिंहराज ने अपनी शक्ति का विस्तार किया और 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण किया। सिंहराज के पश्चात् इस वंश में विग्रहराज द्वितीय, दुर्लभराज द्वितीय, गोविन्दराज तृतीय, विग्रहराज तृतीय, पृथ्वीराज प्रथम और अजयराज आदि शासक हुए। अजयराज ने ही अजमेर नगर को बसाया था। अजयराज के बाद अर्णोराज शासक बना। अर्णोराज की हत्या उसके पुत्र जगदेव ने कर दी और शासक बन बैठा, परन्तु वह अधिक समय तक शासन नहीं कर सका। जगदेव के छोटे भाई विग्रहराज चतुर्थ 'वीसलदेव' ने उसे सिंहासन से उतार कर स्वयं चौहान वंश की बागडोर अपने हाथ में ले लिया। विग्रहराज चतुर्थ के पश्चात् उसका पुत्र अपरगांगेय शासक बना, परन्तु उसका शासन अल्पकालीन सिद्ध हुआ। इसके कुछ समय उपरान्त पृथ्वीराज तृतीय ने चौहान वंश की शासन सत्ता को संभाला, जिसे 'रायपिथौरा' की संज्ञा प्रदान की गयी है। यह चौहान वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक था। मुहम्मद गोरी के साथ हुए 'तराइन के द्वितीय युद्ध 1192ई0 में पृथ्वीराज चौहान की पराजय हुई, तत्पश्चात उसके राज्य पर गोरी ने अधिकार कर लिया। इस प्रकार दिल्ली पर तुर्कों का अधिकार हो जाने के बाद चौहान वंश का भी पतन हो गया।

6. गुजरात का चालुक्य या सोलंकी वंश

चालुक्य वंश की अनेक शाखाओं में गुजरात के चालुक्य वंश का विशेष महत्व है। इस वंश के आरम्भिक शासक मूलराज प्रथम (941–994ई0) ने गुजरात के बड़े भाग को जीतकर 'अन्हिलवाड़' को अपनी राजधानी बनाया। मूलराज के बाद उसका पुत्र चामुण्डराय शासक बना, परन्तु इसका शासन अल्प समय तक रहा और इसने अपने पुत्र बल्लभराज को सिंहासन सौंप दिया तथा खुद तीर्थयात्रा पर चला गया। बल्लभराज के पश्चात् दुर्लभराज राजा बना, परन्तु यह अधिक समय तक शासन न कर सका और अपने भतीजे भीमराज प्रथम के पक्ष में सिंहासन त्याग दिया। भीमराज प्रथम (1022–1064 ई0) के समय महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मंदिर को लूटने के लिए आक्रमण किया। भीमराज

प्रथम उसके आक्रमण से डरकर भाग खड़ा हुआ और महमूद गजनवी ने अपने अभियान में सफलता प्राप्त की। भीमराज के बाद उसका पुत्र कर्ण चालुक्य वंश की गद्दी पर आसीन हुआ। कर्ण के पश्चात् जयसिंह सिद्धराज (1094–1145 ई0) इस वंश का महान शासक हुआ। इसने शाकम्भरी के चौहानों, मालवा के परमारों, बुन्देलखण्ड के चन्देलों तथा कल्याणी के चालुक्यों के साथ युद्ध किए तथा सभी में सफलताएं प्राप्त किया। इसके कुछ समय पश्चात् कुमारपाल (1145–1172 ई0) इस वंश का महत्वपूर्ण शासक बना। इसने अपने शत्रुओं को पराजित कर अपने राज्य की सीमाओं को सुरक्षित किया। कुमारपाल की मृत्यु के पश्चात् उसके भाई महीपाल का पुत्र अजयपाल (1172–1176 ई0) शासक बना, परन्तु कुछ समय पश्चात ही इसकी हत्या कर दी जाती है तथा इसका पुत्र मूलराज द्वितीय सिंहासन प्राप्त करता है। मूलराज द्वितीय ने 1178ई0 में आबू पर्वत के निकट मुहम्मद गोरी को पराजित किया था। 1178 ई0 में ही मूलराज द्वितीय की मृत्यु हो गयी और उसका भाई भीमदेव द्वितीय (1178–1239ई0) सिंहासन पर आसीन हुआ। इसके समय में इसके राज्य पर तुर्कों ने आक्रमण किया, परन्तु सफलता नहीं मिली। कालान्तर में गुजरात का राज्य भी दिल्ली सल्तनत का अंग बन गया।

7. हिन्दू–शाही राज्य

काबुल घाटी तथा गांधार प्रदेश में लम्बे समय से एक तुर्की–शाही वंश शासन कर रहा था। इस वंश के अंतिम शासक लगतूर्मा को उसका ब्राह्मण मन्त्री कल्लर सिंहासन से हटाकर स्वयं शासक बन बैठा और हिन्दूशाही राज्य की नींव डाली। इस प्रकार नौवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दूशाही वंश की स्थापना हुई। कल्लर ने तुर्कों के आक्रमण के भय के कारण अपनी राजधानी काबुल से हटाकर सिन्धु नदी के दाहिने तट पर स्थित 'उदभाण्डपुर' को अपनी राजधानी बनाया। कल्हण की राजतरंगिणी में कल्लर को उत्तर भारत का एक यशस्वी सम्राट कहा गया है। कल्लर के पश्चात श्रीसामन्त उसके बाद कमलुक या कमालू तत्पश्चात भीम शासक बनता है। 10वीं शताब्दी के अंतिम समय में जयपाल हिन्दूशाही राजवंश के सिंहासन पर आसीन हुआ। जयपाल एक कुशल शासक सिद्ध हुआ, इसका राज्य सरहिन्द से लेकर मुल्तान और कश्मीर तक फैला हुआ था, जिसमें पश्चिमी पंजाब, उत्तर–पश्चिम सीमाप्रान्त और पूर्वी अफगानिस्तान सम्मिलित था। हिन्दूशाही राजवंश के शासकों–जयपाल, आनन्दपाल, त्रिलोचनपाल और भीमपाल को महमूद गजनवी के साथ निरन्तर युद्ध करना पड़ा। परन्तु ये शासक तुर्कों के लगातार हो रहे आक्रमण को रोकने में असफल रहे और 11वीं शताब्दी के प्रथम चरण में महमूद गजनवी ने उनके राज्य को अपने राज्य में मिला लिया।

8. चन्देल वंश

प्रारम्भिक चन्देल शासक कन्नौज के प्रतिहार शासकों के सामन्त थे। 9वीं शताब्दी के प्रारम्भ में नन्नुक ने चन्देल वंश की स्थापना की। नन्नुक के बाद वाक्पति तथा उसके बाद जयशक्ति अथवा 'जेजाक' चन्देल वंश के शासक बने। इसी के नाम पर चन्देल प्रदेश को जेजाकभुक्ति नाम से जाना जाने लगा। जयशक्ति के बाद उसका भाई विजयशक्ति राजा बना। चन्देलवंशी शासक हर्ष (900–925ई0) के उत्तराधिकारी यशोवर्मन (925–950ई0) के समय चन्देल वंश की प्रतिष्ठा काफी बढ़ गयी थी। यशोवर्मन ने त्रिपुरी के कलचुरि राजा युवराज प्रथम तथा परमार राजा सीयक द्वितीय को पराजित कर अपने राज्य की सीमा चेदि तथा मालवा तक बढ़ा लिया। खजुराहो अभिलेख के अनुसार यशोवर्मन ने कश्मीर तक अपना विजय अभियान किया था। राजा धंग (950–1002ई0) यशोवर्मन का पुत्र तथा उत्तराधिकारी था। इसकी गणना महानतम शासकों में की जाती है। धंग ने हिन्दूशाही शासक जयपाल को सुबुक्तगीन के विरूद्ध सहायता भेजी थी। धंग के पश्चात उसका पुत्र गंड (1002–1019ई0) शासक हुआ। इसी के पुत्र विद्याधर ने कन्नौज के भगोड़े शासक राज्यपाल की हत्या कर दी थी। विद्याधर के पश्चात विजयपाल, कीर्तिवर्मा और मदनवर्मा शासक हुए। तत्पश्चात 1165ई0 में परमर्दिदेव चन्देलवंश का शासक बना, जिसे पृथ्वीराज चौहान ने युद्ध में पराजित किया था। इसके कुछ समय बाद कुतुबुद्दीन ने आक्रमण करके बुन्देलखण्ड के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया।

9. कश्मीर के राजवंश

कश्मीर का राज्य झेलम और उसकी सहायक नदियों के बीच पर्वतों की सुन्दर घाटियों के बीच स्थित था। यहाँ पर आठवीं शताब्दी के मध्य काल में कार्कोट वंश का शासक ललितादित्य मुक्तापीड़ शासन कर रहा था। इसके समय कश्मीर राज्य की बहुमुखी प्रगति हुई। ललितादित्य ने कन्नौज के शासक यशोवर्मन को पराजित करने के साथ ही काबुल तक की विजय प्राप्त करते हुए अपने साम्राज्य को मजबूत बनाया। उसके द्वारा निर्मित कश्मीर का मार्तण्ड मंदिर अत्यधिक प्रसिद्ध है। ललितादित्य के दो पुत्रों ने अल्प समय तक शासन किया। उसका प्रपौत्र जयपीड़ (779–810ई0) इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक हुआ। इसने मगध राज्य को विजित करने का असफल प्रयास किया।

9वीं शताब्दी के मध्य में कश्मीर पर उत्पल वंश का शासन प्रारम्भ हो गया। अवन्तिवर्मा (885–888ई0) इस वंश का पहला शासक बना। अवन्तिवर्मा के पश्चात शंकरवर्मा सिहासनारूढ़ हुआ। इस वंश का अंतिम शासक शूरवर्मा द्वितीय था। 939ई0 में इसकी मृत्यु हो गयी। इसकी मृत्यु के पश्चात यशस्कर राजा चुना गया। यशस्कर ने कुल 9 वर्षों तक शासन किया। इसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी संग्रामदेव की हत्या उसके मंत्री पर्वगुप्त के द्वारा 949 ई0 में कर दी गयी। पर्वगुप्त के पश्चात उसका पुत्र क्षेमगुप्त (950–958ई0) शासक बना। इसका विवाह लोहार वंश की राजकुमारी रानी दिद्दा से सम्पन्न हुआ। कश्मीर के इतिहास में रानी दिद्दा का नाम एक सफल शासिका के रूप में दर्ज है। अपनी मृत्यु से पूर्व दिद्दा ने अपने भांजे संग्रामराज को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था। संग्रामराज ने हिन्दूशाही शासक त्रिलोचनपाल को महमूद गजनवी के विरूद्ध सहायता प्रदान की थी। 1021ई0 में महमूद गजनवी ने कश्मीर को जीतने का असफल प्रयास किया। संग्रामराज कश्मीर का एक योग्य एवं शक्तिशाली शासक था। इसके पश्चात एक के बाद एक अयोग्य शासक हुए, जिसके कारण कश्मीर का राज्य मुस्लिमों के अधिकार में चला गया।

10. मालवा का परमार वंश

राष्ट्रकूट राजवंश के सामंत रहे उपेन्द्र कृष्णराज ने अवसर पाकर 9वीं शताब्दी के आरम्भ में मालवा के परमार वंश की स्थापना की और धार को अपनी राजधानी बनाया। उपेन्द्र कृष्णराज के बाद वैरिसिंह, सीयक प्रथम, वाक्पति प्रथम तथा वैरिसिंह द्वितीय नाम के चार शासकों ने बारी–बारी से शासन किया, परन्तु इनके बारें में अधिक जानकारी नहीं मिलती है। इनके पश्चात हर्षसिंह सीयक (949–973ई0) राजा बना। इसने प्रतिहारों की दुर्बलता का लाभ पाकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

हर्षसिंह के राज्य त्याग के उपरान्त उसका पुत्र तथा उत्तराधिकारी वाक्पतिमुंज (973–998ई0) राजा बना। मुंज एक महत्वाकांक्षी तथा शक्तिशाली शासक सिद्ध हुआ। उसने कलचुरि, हूण और चालुक्य शासकों के विरूद्ध युद्ध किया और सफलता अर्जित किया। मुंज अत्यन्त पराक्रमी, कुशल प्रशासक तथा विद्या प्रेमी शासक था। इसके समय परमार राज्य का चतुर्मुखी विकास हुआ। उसकी राजसभा में पद्मगुप्त, दशरूपक के लेखक धनन्जय आदि कवि एवं विद्वान विराजमान रहते थे। मुंज के पश्चात उसका भाई सिन्धुराज शासक बना, परन्तु वह अल्प कालीन

शासक रहा। भोज परमार (1000–1055 ई0) इस वंश का महान शासक था। राजा बनने के पश्चात राजा भोज ने अनेक युद्ध किया। भोज का चालुक्य शासक जयसिंह के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार रहा। भोज ने हिन्दूशाही शासक आनन्दपाल को महमूद गजनवी के विरूद्ध सहायता प्रदान की। भोज ने अपने जीवनकाल में उत्तर भारत में हो रहे मुस्लिम आक्रमण का सफलता पूर्वक प्रतिरोध किया। भोज एक विद्वान शासक था, जिसने विभिन्न विषयों पर कुल 23 ग्रंथों की रचना की थी। भोज के पश्चात जयसिंह प्रथम परमार वंश की गद्दी पर आसीन हुआ, जिसने मालवा पर कुछ वर्षों तक सफलतापूर्वक शासन किया। जयसिंह के बाद मालवा के परमार वंश में जो शासक हुए थे, वे अपेक्षाकृत अपने पूर्ववर्ती शासकों से निर्बल सिद्ध हुए, जिसके कारण धीरे–धीरे इस साम्राज्य का पतन हो गया और मालवा का राज्य दिल्ली सल्तनत का अंग बन गया।

11. कलचुरि चेदि वंश

कलचुरि के चेदि राजवंश का संस्थापक कोक्कल प्रथम (845–888ई0) था। कलचुरियों का राज्य चन्देल राजवंश के राज्य के दक्षिण में स्थित था। कोक्कल ने सिन्ध प्रदेश के अरबों की सेना को पराजित किया था। कोक्कल ने त्रिपुरी (म0 प्र0) को अपने साम्राज्य की राजधानी बनाया। गांगेयदेव (1019–1041ई0) कोक्कल द्वितीय का पुत्र तथा उत्तराधिकारी था। इसने अपने साम्राज्य को बाहरी आक्रमणकारियों से सुरक्षित रखा। गांगेयदेव का पुत्र लक्ष्मीकर्ण (1041–1072 ई0) उसका उत्तराधिकारी बना। लक्ष्मीकर्ण के राज्य में इलाहाबाद तक का प्रदेश सम्मिलित था। उसके राज्य की सीमाएं बंगाल तक विस्तृत थी। दक्षिण के चोल, पाण्ड्य आदि वंश के शासकों को उसने पराजित किया था। लक्ष्मीकर्ण के पश्चात इस वंश के उत्तराधिकारी दुर्बल सिद्ध हुए और कलचुरि राजवंश पर चन्देलों का अधिकार हो गया।

12. मेवाड़ का राजवंश

इस वंश के बारे में जानकारी का प्रमुख स्रोत 977ई0 का आटपुर का अभिलेख है, जिसमें मेवाड़ के गुहिल या सिसोदिया वंश के 20 राजाओं का उल्लेख मिलता है। परन्तु इस लेख में बप्पा रावल का उल्लेख नहीं मिलता है। बप्पा रावल इस वंश का नौवां शासक था, जिसने अरबों को पराजित किया था। प्रतिहार राज्य की स्थापना के समय मेवाड़ के गुहिल शासकों ने प्रतिहारों की अधीनता स्वीकार कर ली। 1303 ई0 में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय राणा रतनसिंह यहाँ के शासक थे, जिनको पराजित कर अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया। सिसोदिया वंश के लोग इन्हीं गुहिल शासकों की एक शाखा से सम्बंधित थे। बाद के वर्षों में सिसोदिया वंश के शासकों ने भारतीय इतिहास में अपार ख्याति अर्जित किया।

13. अरबों और तुर्कों को भारत पर आक्रमण

सिन्ध प्रदेश को विजित करने के लिए अरब लोग काफी समय पहले से ही प्रयासरत थे, परन्तु उनके प्रारम्भिक प्रयास असफल रहे। 712 ई0 में खलीफा वालिद के समय बसरा के सूबेदार हज्जाज ने मु0 बिन कासिम के सेनापतित्व में एक शक्तिशाली सेना सिन्ध पर आक्रमण करने लिए गठित की। मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध प्रदेश के राजा दाहिर पर आक्रमण किया। राजा दाहिर पराजित हुआ और युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। सिन्ध पर अरबों का अधिकार हो गया, परन्तु उनका राज्य अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सका। कुछ समय पश्चात सिन्ध और मुल्तान के अरब प्रदेशों पर तुर्कों का अधिकार हो गया।

भारत पर तुर्कों का आक्रमण 11वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में ही शुरू हो गया था। सर्वप्रथम गजनी के तुर्की शासक सुबुक्तगीन ने हिन्दूशाही शासक जयपाल पर आक्रमण किया। इसके पश्चात महमूद गजनवी ने उसके इस कार्य में भरपूर सहयोग किया। 1000–1027 ई0 के बीच महमूद गजनवी ने भारत पर कुल 17 बार आक्रमण किया, जिसमें अपार धन–सम्पदा प्राप्त कर अपने देश गजनी ले गया। महमूद गजनवी के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य भारत से अधिक से अधिक धन–सम्पदा प्राप्त करना था। गजनवी के आक्रमणों के काफी समय बाद मुहम्मद गोरी ने भारत पर आक्रमण किया। अपने प्रारम्भिक आक्रमणों में वह गुजरात के शासक मूलराज द्वितीय और तराइन के प्रथम युद्ध 1191ई0 में पृथ्वीराज चौहान से पराजित होने पर भी वह हार नहीं माना, बल्कि और अधिक शक्ति जुटाकर बाद के वर्षों में आक्रमण किया। तराइन के द्वितीय युद्ध 1192 ई0 में पृथ्वीराज चौहान को पराजित करने के एक वर्ष पश्चात् चन्दावर के युद्ध 1194ई0 में गहड़वाल शासक जयचन्द को बुरी तरह पराजित करने के पश्चात उनके राज्य पर अधिकार कर लिया और वहाँ के शासक मु0 गोरी की अधीनता स्वीकार करने लगे। मुहम्मद गोरी के सेनानायक बख्तियार खिलजी ने बिहार और बंगाल तक आक्रमण किए। मुहम्मद गोरी के आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य भारत में अपना राज्य स्थापित करना था। इसी वजह से अपने विजित प्रदेशों में उसने अपने सूबेदार नियुक्त किए थे। मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात उसके गुलाम सेनानायक कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई0 में भारत में तथाकथित गुलाम वंश की स्थापना की। इसी के साथ भारत में तुर्की साम्राज्य की स्थापना हो गयी और धीरे–धीरे उत्तर भारत के अधिकांश राज्य इसी में सम्मिलित कर लिए गए।

निष्कर्ष

पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत में शासन करने वाले अधिकांश राजवंश राजपूत राजवंश थे। राजपूतों की उत्पत्ति का प्रश्न पूर्व मध्यकाल में एक व्यापक ऐतिहासिक सन्दर्भ प्रस्तुत करता है। राजपूतों की उत्पत्ति विदेशियों, बाह्मणों, जनजातियों या वैदिक क्षत्रियों से होना स्वाभाविक जान पड़ती है। हर्ष की मृत्यु के उपरान्त गंगाघाटी और कन्नौज पर अधिकार स्थापित करने के प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप पालों, प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के बीच जो त्रिपक्षीय संघर्ष आरम्भ हुआ, उसमें अंततः प्रतिहार शासकों को सफलता प्राप्त हुई। ये तीनों राजवंश उत्तर भारत के महत्वपूर्ण राजवंश थे। इनके बीच लम्बे समय तक चलने वाला यह संघर्ष इनकी दुर्बलता का कारण बना। दसवीं शताब्दी की शुरूवात तक ये सभी राजवंश आपसी संघर्ष एवं कलह के कारण निर्बल हो चुके थे, जिसके कारण विदेशी आक्रमणकारी भारत पर अपने अभियान में सफल रहे और पूर्व मध्यकाल के अंतिम समय में यहाँ पर मुस्लिम राज्य की स्थापना हो गयी।

सन्दर्भ

1. थापर, रोमिला, 2006, भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. बाशम, ए.एल., 2004, द वन्डर दैट वाज इण्डिया, (अद्भुत भारत), शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा (उ0प्र0)।
3. पाण्डेय, विमलचन्द्र, 2002, प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, सेन्ट्रल बुक डिपो, प्रयागराज।
4. पाठक, विशुद्धानन्द, 2006, उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
5. पाण्डेय, आर.एन., 2004, प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रयाग पुस्तक भवन, प्रयागराज।
6. रायचौधरी, हेमचन्द्र, 2012, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, सेन्चुरी पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली।
7. सिंह, उपिन्दर, 2017, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पियर्सन इण्डिया एजुकेशन सर्विसेज प्रा .लि., नई दिल्ली।
8. श्रीवास्तव, के.सी., 2004, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाईटेड बुक डिपो, प्रयागराज।